हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगीत विभाग का उद्भव तथा विकास

रितु शर्मा
संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

सारांश

हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता से पूर्व शैक्षिणिक सुविधाएं बहुत ही कम थी। जो माता–पिता अपने बच्चों को उच्च शिक्षा देना चाहते थे। वे उन्हे दिल्ली लाहौर या जालन्धर महाविद्यालयों में पढ़ने भेजते थे। परन्तु 22 जुलाई 1970 को हिमाचल प्रदेश विशविद्यालय के अस्तित्व में आने के पश्चात् तत्कालीन समयानुरुप अनेक विषयों की अध्ययन व्यवस्था विश्वविद्यालय प्रशासन ने की। जिससे हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्र रुप से शिक्षा की विकास यात्राा का शुभारंभ हुआ। यद्यति यह हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रथम वर्ष ही था तथापि इस समय हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगीत विषय की शिक्षण व्यवस्था नही थी लेकिन विद्यार्थियों में संगीत विषय की उच्च अकादमिक शिक्षा के प्रति बढ़ते रुझान तथा इस विषय की महत्वता को विश्वविद्यालय प्रशासन पूर्ण रुप से समझ चुका था परिणामस्वरुप सन् 1971 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगीत विभाग की स्थापना की गई। संगीत शिक्षण के अतिरिक्त समय–समय पर संगीत संगोष्ठियां, संगीत प्रदर्शन, परिसर की प्रत्येक शैक्षणिक गतिविधियां जैसे पारितोषिक वितरण, दीक्षान्त समारोह, सेमीनार, कार्यशाला, होस्टल कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण दिवसों पर सांस्कृतिक प्रस्तुति में भागीदारी भी संगीत शिक्षा का महत्त्वपूर्ण सोपान है। गुरु की महिमा का प्रत्यक्ष स्वरूप इस विभाग में देखने को मिलता है। गुरु शिष्य परम्परा का निर्वाह बड़ी श्रद्धा से होता है।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगीत विषय के आरम्भ से पूर्व हिमाचल प्रदेश में संगीत विषय का स्वरुप

हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता से पूर्व शैक्षिणिक सुविधाएं बहुत ही कम थी। जो माता–पिता अपने बच्चों को उच्च शिक्षा देना चाहते थे। वे उन्हे दिल्ली लाहौर या जालन्धर महाविद्यालयों में पढ़ने भेजते थे। हिमाचल प्रदेश में सन् 1948 तक एक भी महाविद्यालय नही था, उसके पशचात् विशेषतः दूसरी व तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत कुछ शिक्षा की ओर ध्यान दिया गया। सन् 1948 और सन् 1970 के मध्य में हिमाचल प्रदेश के सभी महाविद्यालय पंजाब विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आते थे तथा संगीत ही नही बल्कि सभी विषय इस विश्वविद्यालय के अनुसार ही चलते थे।

गुरु शिष्य परम्परा

संगीत शिक्षण की यह विद्या सब से प्राचीनतम् एवं सर्वश्रेष्ठ परम्परा मानी जाती है। वर्तमान समय में भी इसी परम्परा का प्रचलन है एवं इसमें कोई सन्देह नही है कि जितने भी उच्च कोटी के कलाकार हुए है या है उनका अवश्य किसी न किसी परम्परा से सम्बन्ध है उस समय की संगीत शिक्षा अधिक कठिन और साधना से परिपूर्ण थी। गुरु–शिष्य प्रणाली में सर्वशिक्षा गुरु और शिष्य की व्यक्तिगत शक्ति और रुचि अनुसार होती थी। इसमें समय का बन्धन नही होता था साथ पाठ्यक्रम भी निर्धारित होता था। आरम्भ में गुरु शिष्य को कई दिनों तक स्वर अभ्यास ही करवाते थे। जब गुरु शिष्य के स्वरज्ञान से सन्तुष्ट हो जाते थे तभी उसे आगे की शिक्षा अर्थात राग,

आलाप तथा बढ़त का ढंग सिखाया जाता है। शिष्य गुरु को सब कुछ मानते थे, गुरु का विश्वास प्राप्त करने के लिए शिष्य को गुरु की सेवा करनी पड़ती थी। जब गुरु की कसौटी पर शिष्य अच्छा उतरता था तभी उसे शिक्षा देनी प्रारम्भ की जाती थी। इस प्रकार योग्य गुरु के संरक्षण में पूर्ण साधना, घोर निष्ठा एवं रुचि से शिष्य कला मर्मज्ञ बन जाता था। इसका एकमात्र कारण यह था कि गुरु ने संव्य तप करके अथवा साधना करके जो पाया है उस सब को अपने शिष्यों में बांट दिया तथा शिष्यों ने अपने गुरु से प्राप्त इस अनमोल निधि को संवारा, सहेजा तथा अपनी साधना से उसे विकसित कर दिया।

घराना परम्परा

उच्च कोटी के कलाकार दीक्षा द्वारा साधना द्वारा अपनी सृष्टि और भावधारा को शिष्यों की शिक्षा–उपशिक्षाओं में संचरित करते थे, अपने वैशिष्ट्य को शिष्यों में प्रतिभासित कर देते थे जिसके फलस्वरुप शिष्यों में एक विशेष शैली का आविर्भाव हुआ जिसे 'घराना' कहकर पुकारा जाने लगा। इसी घराना के माध्यम से कलाकार उनके कलावैशिष्ट्य को महानकला के हाथ से बचाकर युग–युग तक बराबर सुरक्षित रखना चाहते थे। परन्तु धीरे–धीरे समाज के शिक्षित वर्ग ने परिस्थितियों को समझा एवं सम्भाला। संगीत शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति आई जिसका श्रेय पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, विष्णु नारायण भातखण्डे, सुरेन्द्र मोहन ठाकुर, रवीन्द्र नाथ टैगोर, मौलाबख्श, पण्डित ओमकार नाथ ठाकुर आदि महान विभूतियों को जाता है।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की स्थापना पूर्व हिमाचल में अकादमिक संगीत शिक्षा की स्थिति

एक पृथक राज्य के रुप में अपना अस्तित्व पाने से पूर्व हिमाचल प्रदेश पंजाब का ही भाग था तथा यहां की तमाम शिक्षा प्रणाली भी पंजाब सरकार के अधीन चल रहे विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय के अन्तर्गत ही कार्यरत थी। समय के साथ–साथ पंजाब से भौगोलिक अंतर के कारण हिमाचल प्रदेश की अलग पहचान को देखते हुए तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने 25 जनवरी 1971 में हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य घोषित कर दिया तथा हिमाचल प्रदेश भारत का 18वां राज्य बन गया तथा डॉ. यशवन्त सिंह परमार पूर्ण राज्य के प्रथम मुख्यमन्त्री बने तथा श्री एस0 चक्रवर्ती को हिमाचल प्रदेश का प्रथम राज्यपाल नियुक्त किया गया।

जहां तक इस दौरान शिक्षा को प्रशन है तो शुरु के दौर से हिमाचल प्रदेश के कुछ संस्थानों को पंजाब विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त थी, लेकिन सन् 1963 में हिमाचल प्रदेश में पंजाब विश्वविद्यालय ने स्नातकोतर कक्षाएं आरम्भ की थी तथा यही प्रणाली संगीत शिक्षण के लिए भी लागू थी। संगीत की अकादमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए पंजाब विश्वविद्यालय पर ही निर्भर रहना पड़ता था जिससे कई बार अनेकों संगीत की अकादमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए इच्छुक छात्रों के समक्ष कई प्रकार की विषमताओं के पेश आने के फलस्वरुप वे संगीत की अकादमिक शिक्षा से वंचित रह जाते है। कई बार किसी संस्थान विशेष का दूर होना यदि प्रवेश मिल जाए तो रहने की समस्या तथा परीक्षा संचालन के दौरान परीक्षा केन्द्रों की समीति मात्रा आदि कुछ सामान्य समस्याएं थी जिससे संगीत के छात्र को रु–ब–रु होना पड़ता था क्योंकि इस समय तक लोगों में अकादमिक शिक्षा महता के प्रति समझ तीव्र गति से बड़ने लगी थी, तथा लोग अकादमिक उपाधि अर्जित करने के लिए अधिक आकर्षित हो रहे थे, इसी के मध्यनज़र हिमाचल प्रदेश के प्रथम

मुख्यमंत्री डॉ. यशवन्त सिंह परमारने तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एस. राधा कृष्णन के साथ बातचीत करके हिमाचल प्रदेश में एक अलग विश्वविद्यालय का प्रस्ताव रखा, जिसके फलस्वरुप 22 जुलाई 1970 को हिमाचल प्रदेश विशविद्यालय की स्थापना की गई।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगीत विभाग की स्थापना

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अस्तित्व में आने के पश्चात् तत्कालीन समयानुरुप अनेक विषयों की अध्ययन व्यवस्था विश्वविद्यालय प्रशासन ने की। जिससे हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्र रुप से शिक्षा की विकास यात्राा का शुभारंभ हुआ। शिक्षा की अकादमिक व्यवस्था के सकारात्मक एवं प्रगतिशील परिणाम तीव्रता के साथ पूरे प्रदेश में परिलक्षित हाने लगे। यद्यति यह हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रथम वर्ष ही था तथापि इस समय हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगीत विषय की शिक्षण व्यवस्था नही थी लेकिन विद्यार्थियों में संगीत विषय की उच्च अकादमिक शिक्षा के प्रति बढ़ते रुझान तथा इस विषय की महत्वता को विश्वविद्यालय प्रशासन पूर्ण रुप से समझ चुका था परिणामस्वरुप सन्1971 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगीत विभाग की स्थापना की गई। संगीत विषय के स्नातकोतर शिक्षण को तुरन्त क्रियाशील बनाने के लिए श्री भीमसेन शर्मा (गायन) तथा श्री नन्द लाल गर्ग (सितार) की सेवाएं कला महाविद्यालय नाहन से तुरन्त प्रभाव से प्रदेश विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में स्थानान्तिरित की गई। विद्याार्थियों के लिए कक्षा की व्यवस्था चौड़ा मैदान में आवालॉज भवन में की गई चूंकि यह समय विश्वविद्यालय में संगीत विषय के सूत्रपात का आरम्भिक काल था, अतः शिक्षकों व छात्र वर्ग में विभाग व विषय की उन्नति के प्रति विशेष उत्साह था। उल्लकखनीय है कि विश्वविद्यालय में संगीत विशय के प्रथम सत्र के छात्रों में श्री चमन वर्मा जो वर्तमान में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगीत विभाग से प्रो0 एवं विभागध्यक्ष के पद पर कार्य करने के पश्चात् 30 जून 2009 को सेवानिवृत हो चुके है, भी है। प्रो0 वर्मा के अनुसार उस समय विभाग को गति प्रदान करने के लिए छात्रों ने विशेष भूमिका निभाई। कक्षा के लिए वाद्य यंत्रो व सहायक उपकरणों की व्यवस्था प्रारम्भिक चरणों में छात्रों–अध्यापकों ने स्वयं की।

संगीत विभाग में एम.फिल. एवं पीएच.डी. शिक्षण का आरम्भ

अपने विकास के सतत् मार्ग पर अग्रसर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में सन् 1981 में एक महत्वपूर्ण पड़ाव आया जब डॉ0 इन्द्राणी चक्रवर्ती विभाग में रीडर के पद पर नियुक्त हुई, तदोपरान्त संगीत विभाग की अध्यक्ष बनी। ऐसा पहली बार हुआ कि संगीत का शिक्षक ही संगीत विभाग का अध्यक्ष बना। इसी वर्ष श्री चमन वर्मा तथा कृष्ण कुमार जी सुश्री इन्द्राणी चक्रवर्ती के निर्देशन में पीएच0 डी0 के लिए पंजीकृत हुए। चमन वर्मा ने वर्ष 1988 में सफलतापूर्वक अपना शोध कार्य सम्पन्न कर पीएच0 डी0 की उपाधि अर्जित की। 1988 से विभाग में एम0 फिल0 के अध्ययन की सुविधा प्रदान की जाने लगी। इसी मध्य में डॉ0 मनोरमा शर्मा के शोध सहायक के रुप में विभाग में नियुक्ति प्राप्त हुई एवं कार्यरत प्राध्यापकों को नियमों में छूट देकर एम0 फिल0 को निर्देशन करने की छूट डॉ0 इन्द्राणी चक्रवर्ती के नेतृत्व में दी गई। सन्1985 को शास्त्र मर्मज्ञ डॉ0 मनोरमा शर्मा को संगीत विभाग में प्रवक्ता गायन के पद पर स्थाई नियुक्ति प्रदान की गई। सन् 1988 में डॉ0 चमन लाल वर्मा के निर्देशन में अनेक संगीत जिज्ञासुओं ने पीएच0 डी0 के लिए पंजीकरण करवाया।

वर्ष 1988 में ही प्रो0 इन्द्राणी के नेतृत्व में अन्तराष्ट्रीय स्तर की संगीत संगोष्ठी के आयोजन से विभाग की कार्य प्रणाली व गरिमा के उच्च संकेत प्रशासक तक जाने लगे। समय एवं छात्रों की मांग को देखते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन ने दृश्य श्रव्य उपकरणों व अत्याधुनिक वाद्य यन्त्रों की खरीद हेतु विशेष बजट विभाग के लिए आबंटित किया। हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति व लोक संगीत पर सर्वेक्षणात्मक शोध प्रक्रिया से उच्चतम शोध परियोजनाओं पर कार्य भी आरम्भ किया गया।

छात्रों एवं संगीत विभाग के प्रशासकों की मांग व विभाग के महत्व को समझते हुए तथा भविष्य की चुनौतियों के प्रति अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए वर्ष 1988 में विश्वविद्यालय ने अम्बेदकर भवन की चतुर्थ मंज़िल में 11 कमरों के एक पूर्ण खण्ड को संगीत विभाग के लिए आबंटित कर दिया जिसमें वर्तमान में संगीत विभाग क्रियाशील है। यहां प्राध्यापकों के लिए अलग–अलग कमरें व गायन–वादन विषयों की क्रियात्मक कक्षाओं के लिए उचित व्यवस्था युक्त कक्षों का प्रावधान है।

सन् 1993 में संगीत विभाग में पेटिंग विभाग भी खुल जाने से एक पूर्ण स्वतन्त्र एवं अलग संकाय का निर्माण हुआ जिसे मंच एवं दृश्य कला संकाय का नाम दिया गया। इसी वर्ष संगीत विभाग में तीन प्रवक्ताओं को नियुक्त किया गया जिनमें डॉ. पी0 एन0 बंसल को वाद्य संगीत और डॉ. आर0 एस0 शांडिल व डॉ. जीत राम शर्मा का चयन गायन विषय के लिए किया गया। इसी वर्ष डॉ. चमन वर्मा को प्रवक्ता के रीडर पद पर पदोन्नति प्राप्त हुई। वर्ष 1993 में श्री नन्द लाल गर्ग 1996 में राजकुमार वर्मा व भीमसेन शर्मा 1997 में डॉ. मनोरमा शर्मा 1998 में कृष्ण कुमार संगीत विभाग में से प्रवक्ता पद से सेवानिवृत हुए। इन समस्त योग्य गुरुओं के अमूल्य योगदान के लिए संगीत जगत इनका सदैव कृतज्ञ रहेगा। वर्ष 1993 से 1997 के मध्य चार प्रवक्ताओं के सेवानिवृत होन से अध्यापकों की कुल संख्या 5 तक सीमित होकर रह गई। वर्ष 1997 में प्रो0 इन्द्राणी चक्रवर्ती के खैरागढ़ विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त होने पर विभाग मात्र चार अध्यापकों तक ही सीमित हो गया। अध्यापन कार्य बोझ व विभाग की प्रतिष्ठता को देखते हुए तत्कालीन कुलपति प्रो0 एस0 के0 गुप्ता ने विभाग में डॉ. मृत्युंजय शर्मा को वादन तथा डॉ0 कीर्ति गर्ग को गायन विषय में अंशकालीन प्रवक्ता के रुप में नियुक्त किया। इसी बीच वर्ष 1997 में श्री अनिल शर्मा द्वारा त्यागपत्र देने के कारण रिक्त हुए तबला वादक के पद पर श्री दलीप शर्मा की स्थायी नियुक्ति भी की गई। वर्ष 2004 में डॉ. चमन वर्मा को प्रो0 तथा डॉ. जीतराम शर्मा व डॉ. आर0 एस0 क्रम में डॉ. पी0 एन0 बंसल को 2006 में रीडर पद पर पदोन्त्त किया गया। वर्ष 2008 में प्रो0 इन्द्राणी चक्रवर्ती, 30 जून 2009 में प्रो0 चमन वर्मा तथा 30 जून 2017 में प्रो0 आर.एस.शाण्डिल संगीत विभाग से सेवानिवृत हो चुके है। इस समय विभाग में चार नियमित अध्यापक कार्यरत है।

शिक्षा क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी शिक्षकों को शिक्षण पद्धति के विकास के लिए भारत सरकार ने समय–समय पर अनेक आयोगों की स्थापना की। सबसे पहले सन् 1948 में राधा कृष्ण आयोग बनाया गया तथा उसके बाद सन् 1966 में कोठारी मिशन की स्थापना हुई। इन दोनो कमीशनों ने एक सुदृड़ ASC की स्थापना की सिफारिश की। इसके उपरान्त National Policy on Education 1986 "N.T.E." के अनुसार यह निर्णय लिया गया कि वर्तमान शिक्षकों को अपने विकास के लिए सृजनात्मक कार्यों के लिए तथा शिक्षण पद्धति के विकास के लिए उचित अवसर दिये जाएं। इसके आधार पर एक सुनियोजित कार्यक्रम के अनुसार ASC के गठन पर बल दिया गया।

अन्त में इन सिफारिशों तथा उदेश्य की पूर्ति के लिए पूरे देश में 48 अकादमिक स्टाफ कॉलेज का गठन किया गया और इन सभी ने 1987 के बाद अपना कार्य आरम्भ किया। इसी कड़ी में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अकादमिक स्टाफ कालेज की स्थापना जून 1989 में की गई। वर्तमान में यह विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की तीसरी मंजिल पर स्थित है जिसमें कार्यालय के अतिरिक्त निदेशक, उपनिदेशक आदि के निजी कक्ष है। इन कक्षों के साथ दो कॉन्फ्रैंस हॉल बनाए गए है जहां लगभग 50 शिक्षकों के बैठने योग्य स्थान है। अकादमिक स्टाफ कालेज का अपना एक पृथक पुस्तकालय भी है जिसमें अनेकों ज्ञानापयोगी पुस्तकें उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त शिक्षण में सहायक अनेक उपकरण DVD, Projectors, Computers तथा Sound System आदि भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इनकी सहायता से अकादमिक स्टाफ कालेज द्वारा आयोजित किए जाने वाले प्रत्येक विषय के उन्मुखी कार्यक्रमों तथा पुनश्चर्या कार्यक्रम सफलता पूर्वक समपन्न किए जाते है। इस में उपकुलपति एवं निदेशक सहित 14 कर्मचारी कार्यरत है तथा अकादमिक स्टाफ कालेज का कार्य सुचारु रुप से चलाने के लिए प्रतिवर्ष इसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वितीय यहायता दी जाती है जिससे अकादमिक स्टॉफ कालेज अपनी स्थापना के उदेश्य को निर्विघ्न रुप से पूरा कर सकें।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अकादमिक स्टाफ कालेज के उदेश्य

ज्ञान की धारा सर्वत्र प्रवाहित रहे इस उदेश्य की पूर्ति की पुनीत भावना विश्वविद्यालय में समाहित रहती है। इस दिशा में अकादमिक स्टाफ कालेज की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रहती है। अकादमिक स्टाफ कालेज पुनश्चर्या कार्यक्रमों तथा उन्मुखी कार्यक्रमों द्वारा शिक्षकों को विशेष रुप से तैयार करती है ताकि शिक्षा व्यवस्था में अधिक उन्नति हो ताकि शिक्षा व्यवस्था में अधिक से अधिक उन्नति हो ताकि इसके दोषों को कम से कम किया जा सके। इस दृष्टि से हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अकादमिक स्टाफ कालेज के कार्यक्रम व उदेश्य इस प्रकार है–

1. शिक्षकों को समाज के समझने में दक्षता प्राप्त करना तथा शिक्षा की समाजिक भूमिका व इसके प्रचार प्रसार का ज्ञान प्राप्त करना।

2. शिक्षा के सामान्य महत्व को तथा उच्च शिक्षा के विशेष महत्व को भारतीय तथा जगत के सन्दर्भ में जानना।

3. शिक्षकों को अपने राष्ट्र की उपलब्धियों के प्रति अपनी भूमिका का परीक्षण करना।

4. शिक्षण के ज्ञान–विज्ञान अवधारणाओं तथा शिक्षण के मापदण्डों को प्राप्त करना तथा उन्हे अधिक कुशल बनाना।

5. शिक्षकों को अपने व्यक्तिगत विकास के लिए अपने शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार विकास करने के लिए प्रेषित करना।

6. व्यक्तित्व में सुधार लाने के लिए कर्मठता, कर्तव्य परायणता, चिन्तन–मनन की अवस्था का आशावादिता का तथा वैज्ञानिक ढंग से कार्य सुधार व विकास करना।

7. शिक्षण संस्थानों के कार्य प्रणाली में दक्षता लाने का ज्ञान प्राप्त करना।

8. विषय संबधी विकास कार्यों व पद्धतियों को विकसित करना व क्रियाशील रखना तथा इसके अन्तर्गत शोध के क्षेत्रों का समुचित ज्ञान प्राप्त करना।

अभी तक अकादमिक स्टाफ कालेज द्वारा उपरोक्त उदेश्यों को लेकर 250से अधिक पुनश्चर्या कार्यक्रमों तथा 125 से अधिक उन्मुखी कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया है। इस प्रकार हम देखते है कि शिक्षण के लिए जरुरी मूलभूत उदेश्यों की पूर्ति में यह संस्था अपना कार्य कुशलता से कर रही है।

संगीत पुनश्चर्या कार्यक्रम

विद्यार्थियों में ज्ञान की धारा सर्वत्र प्रवाहित रहे इस उदेश्य की पूर्ति को पुनित भावना विश्वविद्यालय में समाहित रहती है। इसके लिए अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि शिक्षकों द्वारा विषय विशेष में हो रही नवीनतम प्रगति तथा तकनीक की जानकारी विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से दी जाए ताकि शिक्षा के स्तर में सुधार–दर–सुधार होता रहे। इसके लिए अवश्यक है कि शिक्षक वर्ग ही समय–समय पर अपने विषय वस्तु की नवीनतम जानकारी का समावेश अपने ज्ञान भण्डार में करता रहें ताकि शिक्षार्थियों को समसामयिक लाभ प्राप्त हो इस दिशा में Acadmic Staff College की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। ASC पुनश्चर्या कार्यक्रमों तथा उन्मुखी कार्यक्रमों द्वारा शिक्षकों के विशेष रुप से तैयार करती है ताकि शिक्षण व्यवस्था में अधिक से अधिक उन्नति हो ताकि दोषों को कम से कम किया जा सके। इस दृष्टि से हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में समय समय पर पुनश्चर्या कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

ASC सारे पुनश्चर्या कार्यक्रम के लिए धन, साधन अन्य कार्यालय सम्बन्धी सुविधाएं जुटाता है तथा इसके लिए ठोस योजनाओं को निर्धारित करता है। संगीत के पुनश्चर्या कार्यक्रमों में संगीत विभाग की क्रियात्मक भूमिका रहती है। संगीत चूंकि क्रियात्मक दृष्टि से बहुत महत्व रखता है तथा इसमें व्याख्यानों की अपेक्षा संगीत प्रदर्शन का अनुपात अधिक रहता है। अतः Acadmic Staff College को संगीत विषय के लिए अन्य विषयों से अधिक संगीत विभाग पर निर्भर रहना पड़ता है।

पुनश्चर्या के अन्य विषयों में सामान्य विषय समा ही सकते है परन्तु संगीत जैसे अमूर्त तथा सूक्षम विषय से सम्बन्धित पुनश्चर्या कार्यक्रम में संगीत विभाग का विशेष योगदान होता है, अपितु इसे सफल बनाने के लिए पूरे विभाग के सहयोग की अपेक्षा रहती है। जहां अन्य विषयों में मात्र संयोजन के कार्य से पुनश्चर्या कार्यक्रम में संयोजक के अतिरिक्त संगीत के अतिरिक्त संगीत के प्रदर्शन में संगत के कलाकार वाद्य यंत्र, दृश्य श्रव्य यन्त्र मंच आदि अनेक साधनों की सहायता मिलना बहुत आवश्यक है। संगीत विषय पर अब तक पांच पुनश्चर्या कार्यक्रमों का सफलता पूर्वक आयोजन ASC द्वारा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के सहयोग से किया गया है।

संगीत विभाग का प्रमुख कार्य स्नातक व स्नातकोत्तर (संगीत) का पाठ्यक्रम तैयार करना तथा उसके अनुसार शिक्षण गतिविधियों को संचालित करना है। स्नातकोत्तर शिक्षा के अतिरिक्त यह विभाग एम.फिल., पी–एच.डी. शोधकार्यों से जुड़ा है। विभाग में शोधकार्यों की पर्याप्त सुविधा है।

संगीत विभाग का कार्य क्षेत्र वृहद है। संगीत विभाग की उपलब्धियां भी अनेक हैं। संगीत विभाग एक ऐसा विभाग है जिस पर सदैव सबका ध्यान केन्द्रित रहता है। परिसर की कोई भी सांस्कृतिक गतिविधियां इस विभाग की भूमिका के बिना सम्पन्न नहीं होती। बाहर से आए हुए अतिथि, चाहे वे

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की टीम हो, राष्ट्राध्यक्ष हो या अन्य विशिष्ट गणमान्य व्यक्ति हो, विश्वविद्यालय के अन्य समारोह हो उनके लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना इस विभाग की विशेष उपलब्धि रहती है। इन विशेष आयोजनों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को तैयार करके प्रस्तुत करना इस विभाग के लिए पुनीत कार्य बन जाता है। इन कार्यक्रमों में विभाग के सभी सदस्य एकजुट होकर कार्य में संलग्न रहते है। संगीत शिक्षण के अतिरिक्त समय–समय पर संगीत संगोष्ठियां, संगीत प्रदर्शन, परिसर की प्रत्येक शैक्षणिक गतिविधियां जैसे पारितोषिक वितरण, दीक्षान्त समारोह, सेमीनार, कार्यशाला, होस्टल कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण दिवसों पर सांस्कृतिक प्रस्तुति में भागीदारी भी संगीत शिक्षा का महत्त्वपूर्ण सोपान है। गुरु की महिमा का प्रत्यक्ष स्वरूप इस विभाग में देखने को मिलता है। गुरु शिष्य परम्परा का निर्वाह बड़ी तत्परता व श्रद्धा से होता है। एक ईश्वर प्राप्त कला होने के कारण इसमें व्यवहृत परम्पराएं अन्य विषयों से बहुत भिन्न है। संगीत विभाग के विद्यार्थी अपने गुरुओं का सम्मान बड़ी निष्ठा से करते हैं। इस प्रकार की परम्परा अन्य संकायों में बहुत कम देखने को मिलती है।